जीने की कला सिखाते हैं बाबा..

मन के द्वारे खोल दोय रखो न कोई भेद।
लौट गए बाबा अगर, तो रह जाएगा खेद।

रोशनी, पानी और हवाय इनको प्रवेश करने के लिए महीन सुराख ही बहुत होता है।...और अगर पूरा वातावरण खुला–खुला हो, तो कहने ही क्या? ये तीनों ऊर्जा का स्त्रोत हैं। जीवन हैं। जब हमें मंदिर में जाते हैं, गुरुद्धारे में जाते हैं, मस्जिद में जाते हैं या चर्च में प्रवेश करते हैं, तो हमारे मन के बंद पड़े छिद्र भी खुल जाते हैं। वो इसलिए, ताकि हमारा मन–तन ऊर्जा से भर जाए। रोशनी अंदर के सभी अंधेरों यानी बुराइयों को नष्ट कर दे, हवा अशुद्धता को बहा ले जाए और पानी उसे निर्मल कर दे। शिर्डी भी एक ऐसा ही पवित्र स्थल है, जहां रोशनी, पानी और हवा तीनों अपने प्रवाह में हैं। जैसे ही यहां की सीमाओं में कोई प्रवेश करता है, उसके भीतर के समस्त विकार एक–एक करके काफूर होने लगते हैं।

इन तीनों चीजों को कभी बांधकर नहीं रखा जा सकता। उन्हें मुठ्ठी में कैद नहीं किया जा सकता। हां, अपने भीतर जितना समेटना चाहें, समेटकर रख सकते हैं। वश उसके लिए मन बड़ा करना होता है। मन बड़ा करना ही एक कठिन तपस्या है। साईं बाबा हमें यही तपस्या करने का सरल नुस्खा सिखाते हैं। बाबा भी रोशनी, पानी और हवा के रूप में हमारे इर्द–गिर्द सदा मौजूद हैं। वे हमारे अंदर प्रवेश करना चाहते हैं, लेकिन अकसर इनसान स्वार्थवश, ईर्ष्यावश अपने मन के अंदर ताला डालकर बैठ जाता है। उसका अहंकार किसी को अंदर आने की इजाजत नहीं देता। क्योंकि उसे लगता है कि, अगर कोई उसके अंदर दाखिल हो गया, तो फिर उसका अहंकार क्या रह जाएगा?

सारा संसार इन्हीं तीन चीजों को ईश्वर के रूप में पूजता है। इसलिए यह शास्वस्त सत्य है कि, बाबा बाबा दिखते तो सशरीर रहे, लेकिन हैं वो सर्वव्यापी–पानी, हवा और रोशनी के रूप में। इसलिए मन के द्वारा हमेशा खुले रखना, क्या पताय किस रूप में बाबा हमारे अंदर आकर विराज जाएं।

एक थे प्रो. जीजी नार्के। वे बाबा के भक्त बापू साहब बुटी के दामाद थे। बहुत पढ़े–लिखे व्यक्ति। एक बार उन्होंने कहा था कि बाबा का शरीर तो रात में द्वारका माई(शिर्डी) में रहता था, लेकिन बाबा खुद रातभर देश–विदेश में विचरण करते हर भक्त के पास पहुंच जाते हैं। बाबा कई बार सुबह भक्तों को बताते थे कि उन्होंने किस प्रकार अपने एक भक्त की जिंदगी बचाई। बाबा यह सब इसलिए बताते थे कि, ताकि लोगों में भी परोपकार की भावना जागृत हो।

तब की एक कहानी....
हिमाडपंत ने अपने ग्रंथ श्री साईसत्चरित्र में एक कहानी का वर्णन किया है, जो यह बताने के लिए पर्याप्त है किय बाबा कैसे देश–दुनिया में भ्रमण करते रहते थे। कैसे वे लोगों को परोपकार की ओर अग्रसर करते थे। बंबई में रहते थे श्री रामलाल। वो पंजाबी ब्राह्मण थे। एक

दिन बाबा ने उनके स्वप्र में आकर शिर्डी आने को कहा। श्री रामलाल को यह नहीं पता था कि, स्वप्न में आने वाले बाबा कौन है? लेकिन एक दिन जब वे सड़क पर टहल रहे थे, तभी एक दुकान पर उनकी नजर पड़ी। वहीं बाबा की तस्वीर टंगी थी। श्री रामलाल को ज्ञात हो गया किय उनके स्वप्र में कौन आया था। श्री रामलाल शिर्डी पहुंचे और जीवनपर्यन्त वहीं रहे।

Govindrao Dabholkar
(Hemadpant)

बाबा ने श्री रामलाल को स्वप्न क्यों दिया होगा? क्योंकि श्री रामलाल आलौकिक सुख की तलाश में थे, लेकिन उन्हें कोई गुरु नहीं मिल रहा था, जो उनका मार्ग प्रशस्त करे। बाबा ने उनकी चिंता भांप ली और स्वप्र में आकर उन्हें अपने पास बुला लिया। यह बाबा का एक चमत्कार था। बाबा सर्वव्यापी हैं। उनके भक्तों का अगर कोई दुरूख–तकलीफ होती है, तो तुरंत किसी न किसी रूप में उनके पास पहुंच जाते हैं।